भारत की जनसंख्या वृद्धि और प्रजनन स्तर

पृष्ठभूमि

भारत, जिसकी वर्तमान जनसंख्या 137 करोड़ है, विश्व की दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश है। 2027 तक, उम्मीद है भारत चीन से आगे निकलकर सबसे अधिक आबादी वाला देश (यूएन वर्ल्ड पॉपुलेशन प्रॉस्पेक्ट्स 2019) बन जायेगा[1]। साथ ही, प्रमाण जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट का भी संकेत देते हैं। जनसंख्या पर भारतीय जनगणना के कई दशकों के आंकड़ों का विश्लेषण सभी धार्मिक समूहों में घटती वृद्धि दर की पुष्टि करता है। **दशकीय वृद्धि दर**, यानि 10 साल की अवधि में जनसंख्या वृद्धि दर, 1991-2001 के 21.5% से 2001-2011 में **घटकर** 17.7% हो गई। (जनगणना 2011)।

हालांकि दशकीय वृद्धि दर सभी धार्मिक समूहों में घट रही है परन्तु विभिन राज्यों में स्वास्थय, साक्षरता, पोषण, रोज़गार एवं महिलायों की शक्तिकरण की मात्रा के आधार पर अंतर-राज्ययी और अंतर-शेत्रीय विभिन्ताएँ मौजूद हैं । ध्यान देने वाला तथ्य यह है कि कुल प्रजनन दर-टीएफआर, यानी एक महिला से पैदा हुए बच्चों की औसत संख्या, जो 1950 के दशक में 6 या उससे अधिक थी, 2019-21 में घटकर 2.0 हो गई है[2]।

भारत की कुल जनसंख्या का आकार तुरंत कम नहीं होगा क्योंकि देश जनसांख्यिकीय परिवर्तनकाल के परिणामस्वरूप जनसंख्या की बढ़ोतरी *(मोमेंटम)* का अनुभव कर रहा है। संक्षेप में, भारत में 10-24 वर्ष[3] की आयु के युवा व्यक्तियों (जो प्रजनन आयु वर्ग में हैं या जल्द ही होंगे) का अनुपात काफी ज़्यादा (लगभग 30.9%) है। यहाँ तक कि अगर यह समूह प्रति दंपति एक या दो बच्चे पैदा करता है, तब भी उनकी उच्च संख्या के कारण कुल जनसंख्या में वृद्धि अवश्य होगी। इस प्रकार, भारत को युवाओं के अपने बड़े अनुपात के साथ अपनी जनसंख्या को स्थिर करने में कुछ समय लगेगा।

जनसंख्या वृद्धि के चालक

- ***जनसंख्या की बढ़ोतरी,*** जो एक अधिक युवा आबादी जो कि बच्चे पैदा करने के वर्ग में हों, होने के कारण है, जनसंख्या वृद्धि का अहम कारक है[4]। इस गति को धीमा करने का एकमात्र तरीका शादी की उम्र एवं पहली गर्भावस्था में देरी करना और जन्म के बीच अंतर सुनिश्चित करना है।
- ***गर्भनिरोधक की अपूरित मांग*** के कारण उच्च प्रजनन क्षमता - यह परिस्तिथि तब आती है जब एक महिला परिवार नियोजन सेवाओं तक पहुँच या गर्भनिरोधक उपयोग ना कर पाने के कारण अपनी वांछित/इच्छित प्रजनन स्तर को बनाए नहीं रख पाती है।
- ***उच्च वांछित प्रजनन स्तर:*** यह कई कारकों के कारण होती है, इसमें लड़कियों की निम्न स्थिति और बेटों को प्राथमिकता देने के साथ साथ, माता-पिता द्वारा, वास्तव में जितने बच्चे चाहिए, उससे अधिक बच्चों को जन्म देना शामिल है, ताकि उच्च शिशु मृत्यु दर की भरपाई हो सके।

1. मुख्य जनसांख्यिकीय संकेतकों के रुझान का विश्लेषण

1.1. भारत में दशकीय जनसंख्या वृद्धि का रुझान

स्वतंत्रता के बाद, भारत ने 1941 से 1971 तक एक स्थिर विकास का अनुभव किया। फिर 1981 के बाद से इसके धीमा होने के संकेत दिखाई देने लगे। बेहतर स्वास्थ्य देखभाल और बीमारी की रोकथाम में सुधार और प्रबंधन ने वर्षों में मृत्यु दर में भारी गिरावट के साथ, जीवन प्रत्याशा में काफी वृद्धि की। जनसंख्या में औसत वार्षिक घातांकीय वृद्धि 1971-81 में 2.2% से 2001-2011 की अवधि में घटकर 1.6% हो गई। राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम के प्रयासों का प्रजनन क्षमता को कम करने पर काफी प्रभाव पड़ा।

PEOPLE MATTER

Delhi
B-28, Qutab Institutional Area
PIN – 110016
T: +91-11-43894100

Jaipur
C-9, Shiv Marg, Shyam Nagar
PIN – 302019
T: +91-141-4104771

Lucknow
C-3, Nirala Nagar
PIN – 226020
T: +91-522-4005091

Patna
123 A, Patliputra Colony
PIN – 800013
T: +91-612-2270634

तालिका 1. जनसंख्या वृद्धि दर में रुझान *(स्रोत: जनगणना 2011)*[5]

जनगणना वर्ष	जनसंख्या	जनगणनाओं के बीच प्रतिशत परिवर्तन	वार्षिक वृद्धि दर (%)
1951	36,10,88,090	13.3	1.3
1961	43,92,34,771	21.6 ↑	2.0
1971	54,81,59,652	24.8 ↑	2.2
1981	68,33,29,097	24.7 ↑	2.2
1991	84,64,21,039	23.9 ↓	2.2
2001	1,02,87,37,436	21.5 ↓	2.0
2011	1,21,01,93,422	17.6 ↓	1.6

1.2. धार्मिक समूहों में जनसंख्या वृद्धि

2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की जनसंख्या में 79.8% हिंदू, 14.2% मुसलमान, 2.3% ईसाई और 1.7% सिख शामिल हैं[6]। दशकीय वृद्धि दर सभी धार्मिक समूहों में घट रही है; यह पिछले तीन दशकों में हिंदुओं की तुलना में मुसलमानों के बीच तीव्र रही है। उदाहरण के लिए, पिछली दो जनगणनाओं (2001 और 2011) के दौरान दशकीय वृद्धि दर में गिरावट मुसलमानों के लिए 4.7 प्रतिशत अंक थी जबकि हिंदुओं के लिए 3.1 थी। 2001-11 के दौरान, जैनियों (20.5 प्रतिशत अंक), बौद्धों (16.7 प्रतिशत अंक), सिखों (8.5 प्रतिशत अंक) और ईसाइयों (7 प्रतिशत अंक) के लिए जनसंख्या वृद्धि दर में भारी गिरावट देखी गई।

तालिका 2. धार्मिक समूहों की दशकीय वृद्धि दर और कुल जनसंख्या में उनके हिस्से का %
स्रोत: भारत की जनगणना (1991-2011)

धार्मिक समूह	% में दशकीय विकास दर			कुल जनसंख्या में हिस्सा		
	1981-1991	1991-2001	2001-2011	1991	2001	2011
कुल मिलाकर	23.9	21.5	17.7			
हिंदू	22.7	19.9	16.8	81.5	80.5	79.8
मुसलमान	32.9	29.3	24.6	12.6	13.4	14.2
ईसाई	17.7	22.5	15.5	2.3	2.3	2.3
सिख	25.5	16.9	8.4	1.9	1.9	1.7

**अन्य धार्मिक समूहों में कुल जनसंख्या का अनुपात बहुत कम होता है और इसलिए उनकी दशकीय वृद्धि दर और कुल जनसंख्या में हिस्सेदारी बहुत महत्वपूर्ण नहीं है।*

2. भारत में कुल प्रजनन दर के रुझान

2.1. भारत में कुल प्रजनन दर (टीएफआर) में दशकीय परिवर्तन

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) के आंकड़ों के अनुसार, टीएफआर 1992-93 में 3.4 से 2019-21 में गिरकर 2.0 हो गया है (चित्र 1 देखें), जो कि 2.1 के टीएफआर लक्ष्य की पहुँच के भीतर है, जैसा भारत सरकार की राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 द्वारा परिकल्पित है।

Delhi
B-28, Qutab Institutional Area
PIN – 110016
T: +91-11-43894100

Jaipur
C-9, Shiv Marg, Shyam Nagar
PIN – 302019
T: +91-141-4104771

Lucknow
C-3, Nirala Nagar
PIN – 226020
T: +91-522-4005091

Patna
123 A, Patliputra Colony
PIN – 800013
T: +91-612-2270634

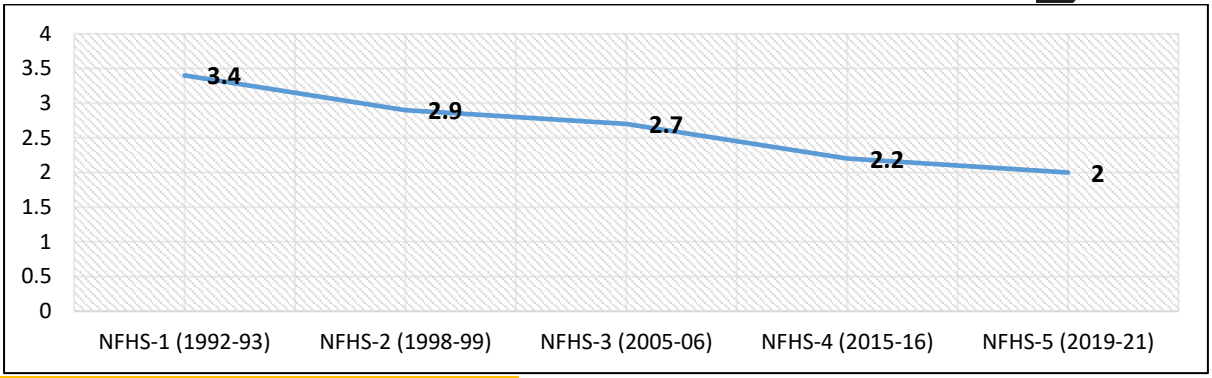

चित्र 1. भारत में कुल प्रजनन दर के रुझान

2.2. भूगोल और धर्म के अनुसार कुल प्रजनन दर

यह देखा गया है कि प्रत्येक धार्मिक समूह में टीएफआर घट रहा है। हालांकि, 2019-21 में सबसे अधिक टीएफआर 2.4% मुसलमानों में देखा गया, परन्तु पिछले दस सालों में मुसलामानों की टीएफआर में सबसे अधिक गिरावट - 1 % पॉइंट - भी देखी गयी है, जो कि अन्य सभी धर्मों में आई गिरावट से अधिक है (चित्र 2 देखें)।

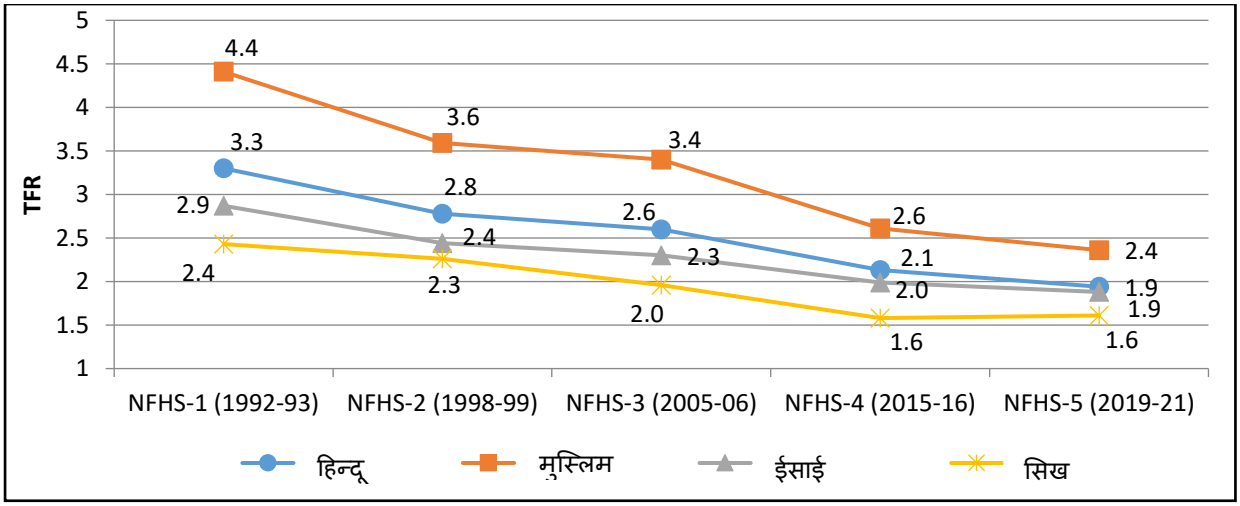

चित्र 2. धर्म द्वारा कुल प्रजनन दर में रुझान

2.3. भारतीय राज्यों में कुल प्रजनन दर में दशकीय परिवर्तन:

- इसी तरह, 2005-06 से 2019-21 तक, तमिल नाडू, जो 1.8 पर स्थिर है, को छोड़कर सभी राज्यों में टीएफआर में गिरावट दिखाई दे रही है। एनएफएचएस-5 (2019-21) के अनुसार, सबसे अधिक टीएफआर बिहार (3.0) का, उसके बाद मेघालय (2.9), उत्तर प्रदेश और झारखण्ड (2.3), तथा मणिपुर (2.2) का है। दूसरी तरफ, सिक्किम (1.0), गोवा (1.3), पंजाब और पश्चिम बंगाल (1.6) का कुल प्रजनन दर सबसे कम है (विवरण के लिए, परिशिष्ट 1 देखें)।
- टीएफआर में कमी की उच्चतम दर नागालैंड में देखी गई, जो 2.0 थी। उसके बाद आते हैं उत्तर प्रदेश (1.5), राजस्थान और अरुणाचल प्रदेश (1.2), मध्य प्रदेश (1.1), तथा बिहार, झारखण्ड, मिजोरम और सिक्किम (1.0) (परिशिष्ट 1 देखें)।

आधुनिक गर्भनिरोधक प्रचलन दर (एमसीपीआर) - *वर्तमान में 15-49 वर्ष की आयु की विवाहित महिलाओं का प्रतिशत, जो वर्तमान में कम से कम एक आधुनिक विधि का उपयोग कर रही हैं, या जिनका साथी, किसी समय पर, उपयोग कर रहा है। यह संकेतक उपयोगकर्ताओं द्वारा सभी गर्भनिरोधक विधियों को अपनाने को शामिल*

PEOPLE MATTER

Delhi
B-28, Qutab Institutional Area
PIN – 110016
T: +91-11-43894100

Jaipur
C-9, Shiv Marg, Shyam Nagar
PIN – 302019
T: +91-141-4104771

Lucknow
C-3, Nirala Nagar
PIN – 226020
T: +91-522-4005091

Patna
123 A, Patliputra Colony
PIN – 800013
T: +91-612-2270634

करता है और प्राकृतिक तरीकों को शामिल नहीं करता है - **यह 2015-16 के 47.8% से बढ़कर 2019-21 में 56.5% हो गयी है।**

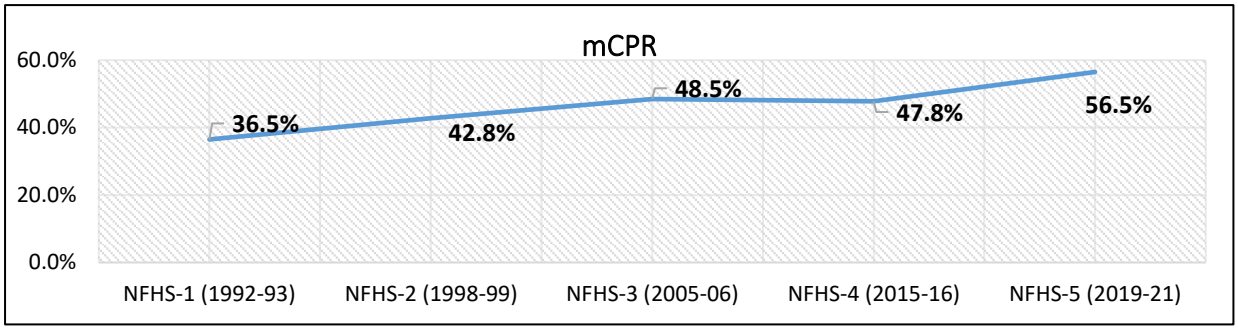

चित्र 3. आधुनिक गर्भनिरोधक प्रचलन दर में रुझान

परिवार नियोजन के लिए अपूरित मांग - *गर्भनिरोधक के लिए वर्तमान में विवाहित महिलाओं (15-49 वर्ष) की एक अधूरी आवश्यकता (अंतराल सुनिश्चित करने और सीमित करने के तरीकों दोनों के लिए) का अनुपात* - ***इस में साल दर साल कमी आई है।*** **एनएफएचएस-1 (1992-93) से एनएफएचएस-5 (2019-21) तक यह 19.5% से 9.4% हो गयी है।**

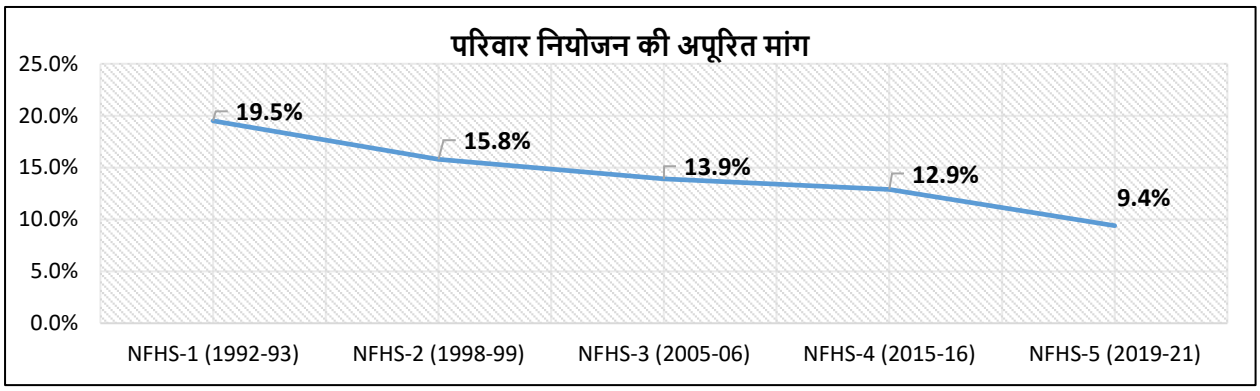

चित्र 4. परिवार नियोजन के लिए अपूरित मांग में रुझान

निष्कर्ष

देश में जनसांख्यिकीय परिवर्तन अपेक्षित रेखाओं पर हैं। पिछले दशकों में सभी धार्मिक समूहों के बीच गिरती प्रजनन दर के लिए बेहतर प्राथमिक शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच और उच्च जीवन प्रत्याशा को ज़िम्मेदार ठहराया गया है। उदाहरण के लिए, केरल में प्रजनन दर में गिरावट मुसलमानों और ईसाइयों में सबसे अधिक थी, एक ऐसा राज्य जहाँ साक्षरता के परिणाम बेहतर हैं। शिक्षा, आर्थिक और अन्य विकास के अवसरों तक पहुँच में वृद्धि के साथ, प्रजनन क्षमता में गिरावट प्राकृतिक जनसांख्यिकीय घटना है।

अगर हम दुनियाभर में सफल परिवार नियोजन कार्यक्रमों को देखें, तो इंडोनेशिया और बांग्लादेश दोनों, जो मुस्लिम बहुल देश हैं, उन्होंने जन्म दर को कम करने के मामले में भारत से बेहतर प्रदर्शन किया है। महिला शिक्षा के उच्च स्तर, रोज़गार के अधिक अवसरों और ज़्यादा गर्भनिरोधक विकल्पों तक पहुँच सहित, कारकों के संयोजन से फर्क पड़ा है। यह स्पष्ट है कि जनसंख्या की गतिशीलता धर्म, संस्कृति या एक समूह बनाम दूसरे का मुद्दा नहीं है। घटती प्रजनन दर को बनाए रखने के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि जेंडर समानता, आर्थिक विकास और परिवार नियोजन सेवाओं तक पहुँच, संस्कृति या धर्म पर ध्यान दिए बिना लड़कियों की शिक्षा की दिशा में विकास संबंधी हस्तक्षेप किए जाए।

Delhi
B-28, Qutab Institutional Area
PIN – 110016
T: +91-11-43894100

Jaipur
C-9, Shiv Marg, Shyam Nagar
PIN – 302019
T: +91-141-4104771

Lucknow
C-3, Nirala Nagar
PIN – 226020
T: +91-522-4005091

Patna
123 A, Patliputra Colony
PIN – 800013
T: +91-612-2270634

संदर्भ

[1] UN World Population Prospects 2019. http://164.100.24.220/loksabhaquestions/annex/173/AU4372.pdf
[2] International Institute for Population Sciences (IIPS) and ICF. 2017. National Family Health Survey (NFHS-4), India, 2015-16: Mumbai: IIPS. http://rchiips.org/nfhs/factsheet_NFHS-4.shtml
[3] Census 2011
[4] https://population.un.org/wpp/Publications/Files/PopFacts_2017-4_Population-Momentum.pdf
[5] http://www.censusindia.gov.in/2011census/PCA/A2_Data_Table.html
[6] https://www.census2011.co.in/religion.php

PEOPLE MATTER

Delhi
B-28, Qutab Institutional Area
PIN – 110016
T: +91-11-43894100

Jaipur
C-9, Shiv Marg, Shyam Nagar
PIN – 302019
T: +91-141-4104771

Lucknow
C-3, Nirala Nagar
PIN – 226020
T: +91-522-4005091

Patna
123 A, Patliputra Colony
PIN – 800013
T: +91-612-2270634